ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की बानगी
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने दिखायी जीने की राह
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदला अजमेरी का जीवन
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – दिसम्बर 2023 ।। अंक – 29

सतत् जीविकोपार्जन योजना से समाज की मुख्य धारा से जुड़ाव

कल तक समाज की मुख्य धारा से वंचित अत्यंत गरीब परिवार अब मुख्य धारा में शामिल होकर आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर निरंतर अग्रसर है। ये वो परिवार हैं जो या तो देशी शराब निर्माण एवं ताड़ी व्यवसाय से जुड़े थे या अत्यंत निर्धन थे। अब ये परिवार सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर अपने रूचि के अनुरूप स्वरोजगार करते हुए समाज के विकास में अब अपना योगदान दे रहे हैं। बिहार सरकार द्वारा राज्य में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत वर्ष 2018 को की गई थी। इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य समुदायों के अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के स्थायी साधन उपलब्ध कराते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। जीविका ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लक्षित परिवारों का चयन कर उन्हें योजना से लाभान्वित करते हुए आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य किया जा रहा है और इसके सापेक्षिक परिणाम भी सामने आए हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें जीने की राह दिखाई है। इस योजना के तहत अत्यंत गरीब परिवारों को उनके रूचि के अनुरूप स्वरोजगार के लिए संसाधन एवं राशि उपलब्ध कराई जाती है। उन्हें स्वयं सहायता समूह से भी जोड़ा जाता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभ

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित होकर लगभग 1.80 लाख परिवार गरीबी रेखा से बाहर निकलकर आर्थिक एवं सामाजिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर हैं। इनमें से हजारों परिवारों की मासिक आमदनी 8 हजार रुपये से भी ज्यादा है। उनकी परिसंपत्ति महज तीन से चार साल में लाख रुपये से ज्यादा हुई है। उनकी पहचान गाँव में लखपतिया दीदी के रूप में बन रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली तस्वीर

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभ दिलाने हेतु चयनित लाभार्थी रूचि के अनुरूप स्वरोजगार कर रही हैं। किराना दुकान, श्रृंगार दुकान, सिलाई केंद्र, ब्यूटी पार्लर, बकरी पालन, गाय पालन समेत कई स्वरोजगारमुखी व्यवसाय करते हुए अपने सपनो को साकार कर रही हैं। स्वरोजगार से बढ़ी आमदनी और मुनाफ़ा से फूस की झोपड़ियाँ अब पक्के मकानों में तब्दील हो रहे हैं। बच्चे स्कूल जाने लगे हैं और सबसे बड़ी बात है कि अब तीनों वक्त का भोजन मिल रहा है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित हुए कई परिवार ऐसे भी हैं जिन्होंने योजना की राशि से स्वरोजगार करते हुए मुनाफा की राशि से एक से अधिक व्यवसाय शुरू किया है। सरकारी योजनाओं का लाभ भी इन परिवारों को मिला हैं जिससे इन परिवारों की दशा और दिशा भी बदली है।

आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की बानगी

खेत में मजदूरी करनेवाली सावित्री दीदी अब उसी खेत को बटइया पर लेकर उसमें खेती कर रही हैं। साथ ही बकरी पालन करते हुए अपने परिवार को आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर सशक्त किया है। सावित्री के सशक्त होने पीछे बिहार सरकार की सतत् जीविकोपार्जन योजना का महत्वपूर्ण योगदान है। सावित्री दीदी लखीसराय जिला अंतर्गत रामगढ़ चौक स्थित शामिल ससंडा गाँव की रहनेवाली हैं। इनके पति विनोद बिंद मजदूर हैं। सावित्री दीदी भी खेतों में मजदूरी किया करती थी, लेकिन उस मजदूरी से जीवनयापन संभव नहीं हो पा रहा था। कर्ज लेकर भोजन की व्यवस्था हो पाती थी। सावित्री दीदी का परिवार गाँव के अत्यंत गरीब परिवार में से एक था।

वर्ष 2020 में सतत् जीविकोपार्जन योजना से सहयोग देने के लिए इनके नाम का अनुमोदन प्रेम जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा किया गया। सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 16 हजार रुपये की लागत से बकरी पालन शुरू किया। इन्हें विशेष निवेश निधि के तहत 10 हजार रुपये और जीविकोपार्जन अंतराल सहयोग राशि भी प्रति माह एक–एक हजार रुपये भी सात माह तक दिया गया। 3 बकरी से शुरू हुआ कारोबार अब 14 बकरी तक पहुँच गया है। इन्होंने 8 खस्सी और 2 पाठा की बिक्री की राशि से 40 हजार रुपये में एक गाय भी खरीदी है। गाय का दूध बेचकर प्रति माह आठ हजार रूपये की कमाई कर रही हैं। इस आमदनी की राशि से सावित्री देवी ने दस कट्ठा खेत बटइया पर लेकर खेती भी कर रही हैं। इनकी आर्थिक तंगी अब दूर हो गई है। इनके चारों बेटे और एक बेटी पढ़ने के लिए स्कूल जाने लगे हैं। वर्त्तमान में इन्हें प्रति माह 10 से 12 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। इनकी परिसंपत्ति लगभग ढ़ाई लाख रुपये की है। सावित्री देवी बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उनके जीवन में खुशहाली लायी है। जीविकोपार्जन निवेश निधि की दूसरी किस्त की राशि भी इन्हें मिल गई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जीवन को मिली नई दिशा

कांति देवी नवादा जिला के गोविन्दपुर प्रखंड की रहने वाली है। कांति देवी के पति राजेश पासवान 15 साल पूर्व अपना परिवार को बगैर सूचना के छोड़ कर चल दिए। इसके बाद से इनका पति से कभी संपर्क नहीं हुआ। इतने सालों तक कोई सूचना नहीं मिलने के उपरांत कांति देवी बिधवा के रूप में अपना जिंदगी जीने लगीं। जंगल से लकड़ी काट कर गाँव में बिक्री कर अपना जीवन–यापन करती थी।

वर्ष 2021 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत जब गोविन्दपुर प्रखंड में अत्यंत गरीब परिवार की पहचान करने के दौरान सुदर्शन जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा इनके दयनीय स्थिति को देखते हुए इन्हें चिन्हित किया गया। उन्होंने जीविकोपार्जन के लिए श्रृंगार के दुकान खोलने की इच्छा जताई। रोजगार संचालित करने के लिए उन्हें जीविका द्वारा प्रशिक्षित किया गया।

सुदर्शन जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा कुल 20,000 रुपये की श्रृंगार सामग्री खरीदकर दुकान शुरु कराया गया। इसके अलावा विशेष निवेश निधि के तहत 10,000 रुपये एवं जीविकोपार्जन अंतराल सहयोग राशि के तहत सात माह तक प्रति माह 1000 रूपये की राशि इन्हें प्रदान की गयी। वह अपने दुकान को मेहनत से चलाने लगीं। दुकान से उन्हें प्रतिदिन 250–350 रूपये आमदनी हो रही है। इस रोजगार की आमदनी में से प्रति माह 500–600 रुपये वह अपने बैंक खाते में जमा करती हैं। इसके अलावा वह अपने समूह के बैठक में भी प्रति सप्ताह 10 रुपए बचत भी कर रही हैं। वर्तमान में उनके दुकान में कुल सम्पति 50,000 रुपये से अधिक है।

कांति देवी कहती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिले इस दुकान से मेरी जिन्दगी अच्छे से कट रही है। साथ हीं गाँव और समाज में एक नई पहचान भी बनी है। जिससे मैं बहुत खुश हूँ। मैं अपने इस व्यवसाय के साथ–साथ किराना दुकान भी करना चाहती हूँ ताकि आमदनी में बढ़ोतरी हो।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने दिखायी जीने की राह

खैरुन निशा सीतामढ़ी जिला के बाजपट्टी प्रखंड की निवासी हैं। खैरुन निशा अपने 6 बच्चों के साथ अपने गाँव में रहती थी, उनके पति ज़ाकिर हुसैन बाहर में अखबार बेचने का काम करते थे। इनके ज़ाकिर हुसैन की तबियत हमेशा खराब रहती थी, जिससे घर चलाने में बहुत कठिनाई होती थी। गरीबी की दुष्चक्र से घिरी दीदी के पास आय का दूसरा कोई साधन भी नहीं था। दीदी हर समय यही सोचा करती थी कि कब आर्थिक स्थिति ठीक होगी जिससे उनकी जीविकोपार्जन की समस्या ख़त्म होगी तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलेगा।

उनकी स्थिति को देखते हुए खैरुन निशा का वर्ष 2019 में ग्राम संगठन द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चयन किया गया एवं समूह में भी जोड़ा गया। दीदी अपने कार्य क्षमता के अनुसार किराना दुकान के लिए इच्छुक हुई। दीदी को ग्राम संगठन के द्वारा किराना दुकान की संचालन हेतु परिसंपत्ति प्रदान की गयी।

वर्तमान में किराना दुकान में प्रतिदिन 2000 से 2500 रूपये तक की बिक्री हो जाती है, जिससे वो महीने में 7000 से 8000 रूपये आमदनी कर लेती है। वर्तमान में दीदी के दुकान में 80000 रूपये से ज्यादा की परिसंपत्ति हो गयी है। दीदी अपने पूँजी को बरक़रार रखते हुए बैंक में बचत भी करती है, दीदी अभी तक अपने बैंक खाते में 13200 रूपये जमा भी कर चुकी है। दीदी अपने बचत के पैसे से बकरी खरीदकर बकरीपालन का कार्य भी कर रही है। दीदी अपने परिवार का अच्छे से भरण–पोषण करने के साथ–साथ अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिलवा रही है। जीविका से जुड़ने के बाद दीदी को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिला है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने दिया सहारा

भागलपुर जिला स्थित सन्हौला प्रखंड के माधोपुर पंचायत की रहने वाली सविता देवी के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना किसी वरदान से कम नहीं है। दरअसल बेहद दयनीय स्थिति में जीवन–यापन करने वाली सविता देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना ने सहारा देकर आत्मनिर्भर बनाया है।

सविता देवी के समक्ष पहले रोजी–रोटी का संकट था। उनके पास आय का कोई साधन नहीं था। ऐसे में परिवार का पालन–पोषण करना एक बड़ी चुनौती थी। उनकी बदहाल स्थिति को देखते हुए उन्हें कल्याण जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। योजना से जुड़ाव के बाद उनका क्षमतावर्द्धन किया गया। तदुपरांत मास्टर संसाधन सेवी के द्वारा सूक्ष्म नियोजन किया गया। इस अधार पर सविता देवी ने श्रृंगार दुकान शुरू करने का फैसला किया। ग्राम संगठन की मदद से उन्हें योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10 हजार रुपये उपलब्ध कराए गए। इससे उन्होंने दुकान हेतु बुनियादी ढांचे का निर्माण किया गया। साथ ही ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रुपये की परिसंपत्ति हस्तांतरित की गयी, जिससे उन्होंने मनिहारी दुकान शुरू की। शुरूआत में उन्हें अपनी दुकान चलाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। लेकिन मास्टर रिसार्स पर्सन की मदद से उन्होंने दुकान चलाना, खरीदारी करना और हिसाब–किताब रखना सीख लिया है।

सविता देवी अब स्वयं दुकान चलाती है। दुकान से उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है। इसी आमदनी में से इन्होंने एक सिलाई मशीन भी खरीदी है। वह दुकान के साथ–साथ सिलाई मशीन चलाकर कपड़े की सिलाई कर अपना भरण–पोषण कर रही हैं। जीविका समूह की दीदियाँ इनकी दुकान से श्रृंगार का सामान खरीदती हैं और कपड़े भी सिलवाती हैं, जिससे उन्हें प्रतिदिन 200–250 रुपये की आय हो जाती है। वर्तमान समय में सविता को प्रतिमाह औसतन 6 से 7 हजार रुपये की आय हो जाती है। सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत सविता दीदी के जीवन में काफी बदलाव आया है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदला अजमेरी का जीवन

दिव्यांग अजमेरी अब अपने पांव पर है खड़ी

कहावत है अगर हौसला बुलंद हो तो कोई भी काम मुश्किल नहीं है। ऐसा करके दिखाया है बेगूसराय जिला के बरौनी प्रखंड अंतर्गत नूरपुर पंचायत की अजमेरी खातुन ने। अजमेरी दिव्यांग हैं। उनके पति मो0 आलम भी पैर से लाचार हैं। वर्ष 2018 से पहले तक अजमेरी और उनके पति के पास कोई काम नहीं था। दिव्यांग होने के कारण उन्हें कोई काम देना भी नहीं चाहता था। काम की कमी एवं रोजगार के अभाव के कारण उनकी आर्थिक स्थिति दिन–प्रतिदिन गंभीर होती जा रही थी। हालत यह थी कि अजमेरी खातुन के परिजनों को कई दिन दो वक्त का भोजन नही मिल पाता था। इसी दौरान सतत् जीविकोपार्जन योजना द्वारा चलाए गए विशेष अभियान में अजमेरी खातुन की दयनीय स्थिति को देखकर उनका चयन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में चयन के बाद अजमेरी का जीवन पूरी तरह बदल गया। अजमेरी ने योजना से मिली आर्थिक मदद से वर्ष 2018 में किराने की एक छोटी दुकान अपने घर में ही खोल लिया। इस दुकान से होने वाली आय से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा। सतत् जीविकोपार्जन योजना द्वारा उनमें व्यवसायिक समझ विकसित करने एवं आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण भी दिया गया। जिसका सीधा लाभ उन्हें उनके व्यवसाय में दिखा। अजमेरी खातुन बताती हैं कि–'जब उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए किया गया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। योजना से जुड़ाव के बाद आर्थिक मदद के साथ–साथ मेरी व्यवसायिक समझ एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित भी किया गया। प्रशिक्षण उपरांत मैंने अपने घर में किराने की दुकान को प्रारंभ किया। किराने की दुकान से आमदनी बढ़ी तो मैंने घर के सामने ही गुमटी में एक और दुकान मनिहारी का शुरू कर लिया। दोनों दुकान पति–पत्नी मिलकर चलाते हैं। मेरे तीनों बच्चे भी मेरे कार्यों में मदद करते हैं। मनिहारी दुकान से भी काफी अच्छी आमदनी होने लगी है।'

समय बदला और दोनों दुकान की आमदनी से मैने बकरी पालन का निर्णय लिया और एक बकरी खरीद लिया। अभी मेरे पास तीन बकरी है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत ग्रेजुएट हो चुकी अजमेरी खातुन को तीनों व्यवसायिक गतिविधियों से प्रतिमाह 08 से 10 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण अब अजमेरी और उनके परिवार का जीवन पूरी तरह बदल गया है। उनके तीनों बच्चे अब विद्यालय जाते हैं। अजमेरी को सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ भी मिल रहा है।

अजमेरी कहती हैं कि–'उनके जीवन में आए बदलावों के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना और जीविका की महत्पवूर्ण भूमिका रही है। अगर मुझे सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद नहीं मिलती तो शायद मेरी स्थिति और भी ज्यादा खराब होती।' अजमेरी और आगे बढ़ना चाहती हैं। वह अपने जीवन में आई खुशियों के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना एवं जीविका को धन्यवाद देती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार